# कलीसिया अध्याय 35

| 1 | **प्रार्थना** |
|---|---|

***समूह अगुवा।*** अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने से सम्बन्धित इस पाठ्यक्रम को प्रार्थना के साथ परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

| 2 | **बाँटना** (20 मिनट) | *[शान्त समय]*<br>इब्रानियों 8-10 |
|---|---|---|

***अपनी बारी*** आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** **( *या* अपने नोट्स को पढ़ें )** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (इब्रानियों 8 से 9) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

| 3 | **याद करना** (5 मिनट) | *[यूहन्ना में प्रमुख वचन]*<br>( 15 ) यूहन्ना 15:5 |
|---|---|---|

**दो दो करके *पुनरावलोकन करें।***
**( 2 ) यूहन्ना 15:5।** मैं दाखलता हूँ: तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

| 4 | **शिक्षा** (85 मिनट) | *[कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई]*<br>आत्मिक वरदानों के अनुसार सेवा करना |
|---|---|---|

निम्नलिखित शिक्षाएं पवित्र आत्मा के बारे में हैं।
मैनुएल 2, अध्याय 21। पवित्र आत्मा का स्वभाव, लोगों और कलीसिया में उसके कार्य।
मैनुएल 2, परिशिष्ट 9। पवित्र आत्मा क्लेश के बीच में भी मसीहियों को सुरक्षित रखता है।
मैनुएल 4, अध्याय 45। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा, पवित्र आत्मा से भरा जाना और पवित्र आत्मा के फल।
मैनुएल 7, अध्याय 35। पवित्र आत्मा के आत्मिक वरदान।
मैनुएल 7 परिशिष्ट 12। अन्य आत्मिक वरदान।

## क. पवित्र आत्मा का स्वरूप व उसके वरदान

### 1. आत्मिक वरदानों का स्वरूप।

**( 1 ) विशेष योग्यता या कार्य।**

एक आत्मिक वरदान (ग्रीक: करिश्मा) ऐसी विशेष योग्यता (कौशल) क्षमता (कार्य, महारथ) जो परमेश्वर अपने अपने अनुग्रह या अपनी श्रेष्ठ इच्छा से किसी को देता है (1 पतरस 4:10; 1 कुरिन्थियों 12:4-6,11)। यह *मसीहियों के जीवन में एक साधारण व असाधारण गतिविधि है।* यह मसीहियों के कौशल या प्रवीणता का परिणाम नहीं है। यह तो *परमेश्वर के अनुग्रह का प्रगटीकरण है* जो मसीहीयों के विभिन्न कामों के द्वारा प्रगट होता है।

**(2) परमेश्वर की शक्ति और बुद्धि का प्रगटीकरण।**

एक आत्मिक वरदान हमेशा मसीहियों में परमेश्वर की शक्ति, बुद्धि और ज्ञान का प्रकाशन (प्रकटीकरण) है (1 कुरिन्थियों 12:7) और यह अनेक स्वरूपों में और अलग अलग प्रकार की सेवा में (सामान्य और आधिकारिक रूप में) प्रगट होते हैं (परमेश्वर की सामर्थ्य और बुद्धि का प्रभाव)।

**(3) एक सीमित वरदान।**

एक आत्मिक वरदान हमेशा सीमित वरदान होता है; उसकी कोई न कोई हद तय होती है "मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह मिला है (इफिसियों 4:7)। न तो किसी को सारे वरदान मिलते हैं और न ही किसी को किसी एक क्षेत्र में लिए ऐसा वरदान मिलता है (1 कुरिन्थियों 12:29-30) कि वह उस क्षेत्र के सारे काम अकेला कर सके (इफिसियों 4:7)।

## 2. अनेकों तरह के आत्मिक वरदान।

***पढ़ें*** रोमियों 12:4-8, 1 कुरिन्थियों 7:1,7; 12:7-10,28-30; 14:6,26; इफिसियों 4:11; 1 पतरस 4:10-11।

**(1) नये नियम में दिये गये आत्मिक वरदान।**

नये नियम में करीब पच्चीस आत्मिक वरदानों के बारे में बताता है (जिसमें आधिकारिक वरदान भी शामिल हैं)। और वे वरदान हैं: भविष्यवाणी *और भविष्यद्वक्ता,* सेवा करना, शिक्षा देना *और शिक्षक,* प्रोत्साहित करना, लोगों की जरूरतों को पूरा करना या दान देना, अगुवाई, दया करना, संयम रखने का वरदान, बुद्धि का वचन, ज्ञान का वचन, विश्वास, चंगा करने का वरदान, सामर्थ्य का काम करने का वरदान, आत्माओं की परख, अन्यान्य भाषाएं, अन्यान्य भाषाओं का अनुवाद, *प्रेरित,* सहायक, प्रशासनिक वरदान, प्रकाशन, मार्गदर्शन करने वाले, भजनकार, *प्रचारक, पास्टर, शिक्षक* और बोलने वाले।

ध्यान दें कि इनमें से कुछ वरदान महज *योग्यताएं* (कौशल, क्षमताएं) ही नहीं हैं, वरन ये *कार्यालय* (कार्य, नियुक्त अधिकार) हैं। प्रेरित, भविष्यद्वक्ता और शिक्षकों ने आत्मिक वरदान प्राप्त किया है, लेकिन इसमें विशेष बात यह नहीं है कि उनके किसी *विशेष क्षेत्र में काम करने की योग्यता (कौशल) है,* वरन उन्हें ऐसा करने का *विशेष कार्यालय(अधिकार, नियुक्ति)* भी प्राप्त है।

यह सत्य नहीं है कि कलीसिया के प्रथम काल में कलीसिया के संचालन किसी कलीसिया कार्यालय के बिना केवल आत्मा के द्वारा संचालित हो रहा था। यरूशलेम की प्रारम्भिक कलीसिया में प्रेरित प्राचीनों (30 ई.प. प्रेरितों 2:42 और 4:33 में, 30-34 ई.प. प्रेरितों 8:1 में, 62-63 ई.प 1 पतरस 5:1 में) और डीकनों के रूप में (30 ई.प. प्रेरितों 4:34-35 में) इफिसियों 4:12 में आत्मिक वरदानों के रूप में दिये गये अधिकारों को अपने लक्ष्यों को प्राचीनों की पीठ की अगुवाई में होकर अपने काम करना चाहिए (प्रेरितों 20:17,28 और 1 पतरस 5:1-2)।

आत्मिक वरदानों की सूची में वे वरदान भी शामिल हैं जिन्हें कलीसिया की भलाई के लिए किया जाता है। कई आत्मिक वरदान अपने स्वरूप में *साधारण और कुछ अति असाधारण* होते हैं। ये सारे काम उन विशेष वरदानों के द्वारा किये जा सकते हैं (शिक्षा, रोमियों 12:7), लेकिन यह कोई आवश्यक नहीं है - इन सभी कामों को बिना आत्मिक वरदान पाये हुए भी किया जा सकता है (शिक्षा, मत्ती 28:20, कुलुस्सियों 3:16)। जो पौलुस यहां पर कहना चाहता है वह यह है कि सभी कामों और लक्ष्यों को पूरा करने के लिए आत्मिक वरदानों या किसी विशेष वरदान की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि कलीसिया में तो बहुत तरह के काम पाये जाते हैं!

**( 2 ) आत्मिक वरदानों की सूची थकाने वाली नहीं है।**

इनमें से कुछ सूचियां एक समान वरदानों की चर्चा करती हैं, लेकिन इनमें से कोई सूची थकाने के लिए नहीं बनायी गयी है। कुरिन्थियों की पत्री में उस समय के लोगों के लिए और विशेष करके वहां की स्थानीय कलीसिया के लिए आत्मिक वरदानों का जिक्र किया गया है, जबकि रोमियों को लिखी पत्री में लिखे गये *वरदान महत्वपूर्ण हैं और उनके बारे में सभी कलीसियाओं को बताना चाहिए।*

**( 3 ) जिन आत्मिक वरदानों को सूची में शामिल नहीं किया गया।**

इन भिन्न सूचियों का आशय यह है कि इनके अलावा और भी हैं, जिन्हें इस सूची में शामिल नहीं किया गया है। उदाहरण के लिए, रचनात्मक और संगीत बजाने का वरदान (निर्गमन 28:3;31:1-6; 35:10,25,35; 36:1; भजन 33:2-3; 45:1; 78:72)।

इसके अलावा हर एक आत्मिक वरदान में अपने आपको प्रदर्शित करने के बहुत से तरीके हैं। उदारहण के तौर पर, शिक्षा देने के बहुत प्रकार के वरदान हैं, जैसे कि वचन द्वारा, या दृष्टान्तों द्वारा, या नाटक द्वारा सिखाने का वरदान, और विभिन्न प्रकार के लोगों के समूहों को शिक्षा देने का वरदान जैस व्यस्कों, बच्चों, दिव्यांगों का समूह इत्यादि। शिक्षा देने वाले इन वरदानों में विशेष योग्यताएं शामिल हो भी सकती हैं और नहीं भी। इन सभी वरदानों की कोई न कोई हद तय होती है(इफिसियों 4:7)।

## 3. आत्मिक वरदानों को प्राप्त करने वाले लोग।

**( 1 ) "प्रत्येक" शब्द का अर्थ कई बार विश्वव्यापक होता है।**

"प्रत्येक" शब्द (ग्रीक: हेकास्तोस) का अर्थ ज्यादातर विश्वव्यापी होता है अर्थात "हर एक वह इन्सान हो आज तक धरती पर पैदा हुआ है" (रोमियों 2:6) या "आज तक धरती पर पैदा होने वाला मसीही" (प्रेरितों के काम 2:38; रोमियों 12:3; 14:12)। इसलिए कई मसीही विश्वास करते हैं कि 1 कुरिन्थियों 7:7, 12:7, 14:26 और 1 पतरस 4:10 में पाया जाने वाला "प्रत्येक" शब्द सिखाता या बताता है कि "हर एक मसीही ने" आत्मिक वरदान पाया है।

**( 2 ) "प्रत्येक" शब्द का कई बार सीमित अर्थ होता है।**

बाइबल में "प्रत्येक" शब्द हमेशा विश्वव्यापी अर्थ नहीं होता है अर्थात "धरती पर पैदा होने वाला हर व्यक्ति"। उदाहरण के तौर पर, "हर एक कपटी" (लूका 13:15), "भीड़ में हर एक जन" (यूहन्ना 6:7), "हर सैनिक" (यूहन्ना 19:23) और "प्रत्येक जरूरतमन्द मसीही" (प्रेरितों 4:35)। इसलिए अन्य मसीही लोग मानते हैं कि 1 कुरिन्थियों 7:7, 12:7, 14:26 और 1 पतरस 4:10 में पाया जाने वाला "प्रत्येक" शब्द का अर्थ हमेशा विश्वव्यापी नहीं होता।

इसके अलावा, जब कभी बाइबल "बिना किसी अपवाद के एक-एक व्यक्ति पर" ज़ोर देना चाहती है तो, वह "हर एक" (ग्रीक: इक हिकास्टोस या हेन हेकास्टोस) का इस्तेमाल करती है (प्रेरितों 20:31; 1 थिस्लुनिकियों 2:11)। इसलिए 1 कुरिन्थियों 7:7, 12:7, 14:26 और 1 पतरस 4:10 में पाया जाने वाला "प्रत्येक" शब्द का सीमित अर्थ *"इस सन्दर्भ में दर्शाया गया प्रत्येक मसीही"* हो सकता है। (रोमियों 5:17-19 में दिये गये शब्द "सभी" की तुलना करो)। इसलिए "प्रत्येक" शब्द का अर्थ बहुत सीमित हो सकता है अर्थात "मसीह की देह में प्रत्येक मसीही जिसे पवित्र आत्मा ने कोई काम करने का अधिकार, अधिकार या साधारण या असाधारण योग्यता (आत्मिक वरदान) प्रदान की है"(1 कुरिन्थियों 12:11,28-30)। इसलिए ऐसा कहना सही नहीं होगा कि पवित्र आत्मा ने हर एक मसीही को एक आत्मिक वरदान जरूर दिया है।

## 4. अनुग्रह और प्रेम, आत्मिक वरदानों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं।

### (1) अनुग्रह आत्मिक वरदानों से बढ़कर है।

इफिसियों 4:7 में लिखा हैं कि "पर हम में से हर एक (मसीही) (ग्रीक: हेनी दे हेकास्तो) को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह (कृपा, करिश्मा = आत्मिक वरदान) मिला है। इसका अर्थ है परमेश्वर का अनुग्रह आत्मिक वरदान से भी बढ़कर है। हर एक मसीह को अनुग्रह प्राप्त हैं, लेकिन यह जरूरी नहीं है कि हर एक मसीही को एक आत्मिक वरदान प्रदान किया गया है। हर एक मसीही को मसीह के दान के परिणाम के अनुसार अनुग्रह मिला है, जो हो सकता है कि वह किसी काम की शुरूआत करने की ईश्वरीय *कौशल* (1 कुरिन्थियों 3:10), कठिन परिश्रम करने के लिए ईश्वरीय *शक्ति* (1 कुरिन्थियों 15:10), दुर्बलता में *साहस* (2 कुरिन्थियों 12:9) या अन्यजातियों में सुसमाचार प्रचार करने की ईश्वरीय *योग्यता* (गलातियों 2:9) हो। और बहुत से मसीहियों को एक आत्मिक वरदान (ईश्वरीय कौशल या क्षमता) प्राप्त होता है (इफिसियों 4:11; 1 पतरस 4:10-11)।

### (2) प्रेम किसी आत्मिक वरदान से बढ़कर है।

1 कुरिन्थियों 12:31क की 31ख से तुलना करने पर, पौलुस प्रेम के मार्ग को सर्वश्रेष्ठ मार्ग बताता है, वह कहता है कि प्रेम का मार्ग किसी भी आत्मिक वरदान से बढ़कर है। एक मसीह अगर किसी वरदान को हासिल करने का प्रयास करता है तो उसे कलीसिया की उन्नति करने के लिए आत्मिक वरदान हासिल करने का प्रयास करना चाहिए, उदाहरण के तौर पर भविष्यद्वाणी (परमेश्वर के वचन की घोषणा करना)। *लेकिन हर एक मसीही को बिना अपवाद के प्रेम करना चाहिए!* अत: निष्कर्ष यह निकलता है कि यद्यपि कलीसिया में कुछ वरदानों की कमी हो सकती है लेकिन प्रेम की कोई कमी नहीं होनी चाहिए! जबकि साधारण और असाधारण आत्मिक वरदान कुछ ही चुने हुए लोगों को दिये गये हैं, वही पवित्र आत्मा के वरदान के रूप में प्रेम बिना अपवाद के सभी को दिया गया है (रोमियों 5:5; तीतुस 3:5-6)। इसलिए प्रेम आत्मिक वरदान से बढ़कर है!

### (3) आत्मिक जन होना केवल आत्मिक वरदानों को धारण करने से बढ़कर है।

आत्मिक वरदान (ग्रीक: करिश्मा) प्राप्त करने से कोई इन्सान ज़्यादा आत्मिक नहीं हो जाता! कुरिन्थियों की कलीसिया में लगभग सभी साधारण व असाधारण आत्मिक वरदान मौजूद थे, लेकिन फिर भी वे, "गैर-आत्मिक, सांसारिक और अपरिपक्व बने रहे" (1 कुरिन्थियों 1:7; 3:1)। वास्तव में "आत्मिक" होने की विशेषताएं निम्नलिखित हैं: आत्मिक परिपक्वता (1 कुरिन्थियों 3:1-4) और पवित्र आत्मा के फल उत्पन्न करना (गलातियों 5:22-24)। कुरिन्थियों की कलीयिसा को लिखे पहले पत्र सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा

यह है कि हर एक मसीही जो कुछ उसके पास है इस्तेमाल करे और इस तरह से उसका इस्तेमाल करें जिससे परमेश्वर को महिमा मिले (1 कुरिन्थियों 10:31),केवल वे ही काम करें जिससे दूसरों की उन्नित हो (1 कुरिन्थियों 10:23) और किसी को ठोकर न पहुंचाए (1 कुरिन्थियों 10:32)।

### 5. आत्मिक वरदानों का उद्देश्य।

आत्मिक वरदानों के चार मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- एक दूसरे की सेवा करना (1 पतरस 4:10-11)
- कलीसिया का निर्माण करना (1 कुरिन्थियों 12:7; 14:12)
- सेंवा करने के लिए मसीहियों को तैयार करना (इफिसियों 4:12)
- अन्त में सारी बातों के लिए परमेश्वर को महिमा देना (1पतरस 4:11)!

## ख. खोजना, ग्रहण करना, स्वीकार करना और आत्मिक वरदानों को निर्धारित करना

### 1. आत्मिक वरदानों की खोज करना।

1 कुरिन्थियों 14:1 में पौलुस उन सभी विश्वासियों से आग्रह करता है जिन्हें पवित्र आत्मा ने अद्भुत तरीके से आत्मिक वरदान प्रदान किये हैं (1 कुरिन्थियों 12:11,28-30): "प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की धुन में रहो, विशेषकर के यह कि भविष्यद्वाणी करो।"

किस प्रकार के वरदानों की विश्वासियों ने (जिनके पास पहले से आत्मिक वरदान हैं) खोज या इच्छा करनी चाहिए?

कुरिन्थियों की मण्डली में तीन मुद्दे बहुत जरूरी थे: किसी विशेष वरदान प्राप्त करनी की इच्छा में परिवर्तन; लगातार प्रेम के मार्ग का अनुकरण करते रहना; और अपनी उन्नति से बढ़कर दूसरे की उन्नति की चाह करना।

**(1) कुरिन्थियों की कलीसिया के सदस्यों को अपनी इच्छाओं को बदलने की जरूरत थी।**
1 कुरिन्थियों अध्याय 12 से 14 में, प्रेरित पौलुस अन्यान्य भाषा में बोलने के वरदान का अनुचित ढंग से इस्तेमाल करने का विरोध करता है। कुरिन्थियों की मण्डली (1 कुरिन्थियों 12:27) अन्यान्य भाषा में बोलने का बहुत अधिक सम्मान दिया करते थे, इसी कारण से ऐसी आशा की जाती थी कि अन्यान्य भाषा में बोलने का वरदान बहुतायत से दिया जाएगा। इस "इच्छा" को बदलने की आवश्यकता है। इस विचार को बदलने की आवश्यकता है क्योंकि अन्यान्य भाषा में बोले जाने को अन्य वरदानों से अधिक महत्वपूर्ण ठहराना गलत है।

आत्मिक वरदानों के बीच फरक को परमेश्वर के वचन के आधार पर निर्धारित करना चाहिए, कुरिन्थियों की कलीसिया के आधार पर नहीं। दोनो बार पौलुस ने वरदानों सूची में पौलुस ने अन्यान्य भाषा में बात करने को सबसे नीचा स्थान दिया है। और 1 कुरिन्थियों 14:1-3,19 में उसने भविष्यद्वाणी को सर्वोच्च स्थान दिया (स्पष्ट शब्दों में परमेश्वर के वचन को बोलना)। कुरिन्थियों में, जिन्हें पवित्र आत्मा ने भविष्यद्वाणी करने का वरदान दिया है, उसे मन से स्पष्ट शब्दों में ज्ञानवर्धक बातों की उदघोषणा करनी चाहिए।

सन्दर्भ (1 कुरिन्थियों 12:28-30 और 14:1-3) हमें मना करता है कि हम 1 कुरिन्थियों 12:31 में दी गयी सलाह को इस तरह से न देखें कि वह प्रत्येक कुरिन्थ वासी को आत्मिक वरदान पाने की धुन में लगा रहने के लिए कह रहा है। जिन कुरिन्थ वासियों को पवित्र आत्मा द्वारा उसके सर्वश्रेष्ठ तरीके से आत्मिक वरदान दिया गया है (1 कुरिन्थियों 12:11) अन्यान्य भाषा में कुछ न समझ आने वाले आत्मिक वरदान की बजाय उनमें समझ के साथ परमेश्वर के वचनों को बताने का वरदान (भविष्यवाणी) पाने की धुन (Greek: zeloó) होनी चाहिए। यहां तक कि पौलुस उन्हें एक ऐसा मार्ग भी सुझाता है जो आत्मिक वरदान प्राप्त करने से भी उत्तम है: अर्थात प्रेम और वह मसीहियों को लगातार प्रेम (1 कुरिन्थियों 12:31ख-14:1) का अनुसरण करने (Greek: diókó) की आज्ञा देता है (वह यह आज्ञा नियमित काल में देता है)। वह वास्तव में यह कहना चाहता है कि प्रेम सारे आत्मिक वरदानों से भी बढ़कर है! खास तौर पर प्रेम लोगों की उन्नति करता है!

### (2) कुरिन्थियों की कलीसिया के सदस्यों को सर्वोत्तम मार्ग का अनुकरण करना चाहिए।

"अनुकरण करना" (ग्रीक: डियोकेटे 14:1) शब्द "धुन में रहना" (ग्रीक: ज़िलौट 12:31; 14:1) से ज्यादा वज़नदार शब्द है, और ये दोनो ही आज्ञाएं नियमित काल में दी गयी है। "अनुकरण करना" *कभी न खत्म होने वाले काम को* दर्शाता है, जबकि "धुन में लगे रहना" कार्य की नियमितता के बजाय उसकी *गहनता* पर ज़ोर डालता है। 1 कुरिन्थियों 14 में जिन श्रोताओं को सम्बोधित किया गया है वे सब वे मसीही हैं जिन्हें पवित्र आत्मा ने वरदान दिये हैं। 1 कुरिन्थियों 13 उस प्रेम के बारे में बात करता है जिसका अनुकरण सारे मसीहियों को हर समय करना चाहिए, जबकि 1 कुरिन्थियों 14:2-3 भविष्यद्वाणी और अन्यान्य भाषा के बारे में चर्चा करता है *जिसका वरदान कुछ ही मसीहियों को प्राप्त है।* अत: सार यह निकाला जा सकता है कि "अनुकरण करना" सारी मण्डली के लिए आज्ञा या आदेश है, जबकि "धुन में लगे रहना" उन मसीहियों के लिए आज्ञा हैं जिन मसीहियों ने आत्मिक वरदान प्राप्त कर लिया है। जबकि सारे मसीहियों को *लगातार* प्रेम का अनुकरण करना चाहिए, वहीं दूसरी ओर जिन लोगों ने आत्मिक वरदान पाए हैं उन्हें बिना समझ के बोले जाने वाले वरदान अर्थात अन्यान्य भाषा के वरदान की बजाय समझ के साथ बोले जाने वाले वरदान अर्थात भविष्यद्वाणी को पाने की धुन में लगा रहना चाहिए।

इसके अलावा, हमें आत्मिक वरदान को प्राप्त करने और उसको इस्तेमाल करने के बीच अन्तर को पहिचानना चाहिए (1 कुरिन्थियों 14:26-33)। "धुन में लगे रहने" की आज्ञा (Greek: zéloute) का आशय आत्मिक वरदानों को *हासिल* करने से नहीं, वरन उस वरदान को एक जुबान अर्थात उसे कलीसिया में इस्तेमाल करने से है। "विशेषकर" (बेहतर शब्द: बल्कि)(ग्रीक: मैलोन डी)(1 कुरिन्थियों 14:1) शब्द, दर्शाता है कि आत्मिक वरदानों के प्रगटीकरण में बहुत फरक है। कई आत्मिक वरदान "बड़े वरदान" हैं (1 कुरिन्थियों 12:31)। पौलुस बताता है कि सबसे बड़ा वरदान परमेश्वर के वचनों की समझ के साथ उदघोषण करना है (भविष्यद्वाणी : जो प्रेरित, भविष्यद्वक्ता और शिक्षक करते हैं)(1 कुरिन्थियों 12:28), इस तरह से वह इशारों में साफ तौर पर बताता है कि कुरिन्थियों की कलीसिया गलत थी जो अन्यान्य भाषा में बात करने को ज्यादा महत्व दे रहे थे।

### (3) कुरिन्थ की कलीसिया के सदस्यों को अपनी मनसा को बदलकर (अपनी उन्नति की चिन्ता को छोड़कर )दूसरों की उन्नति करने पर ज़्यादा जोर देना चाहिए।

1 कुरिन्थियों 14:12 वास्तव में कहता है कि," इसलिये तुम भी जब आत्मिक वरदानों की धुन में हो, तो ऐसा प्रयत्न करो कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो। यह असम्भव नहीं है कि कुरिन्थियों के लोग, जो अभी अभी अन्यजातियों में से बाहर आये हैं, ऐसा माने कि हर आत्मिक वरदान उन्हें अलग अलग (अच्छी-कहलाने वाली) आत्माओं से मिलता है। पौलुस उनकी यह समझने में सहायता करता

है कि ये सारे वरदान उन्हें एक ही आत्मा अर्थात पवित्र आत्मा (1 कुरिन्थियों 12:4) से मिलते हैं किसी और आत्मा से नहीं। जबकि कुरिन्थ के लोग उन योग्यताओं को हासिल करने का प्रयास कर रहे थे जो योग्यताएं कुछ विशेष आत्माओं में पायी जाती हैं, पौलुस उनसे उन वरदानों (योग्यताओं, क्षमताओं, कौशल) को प्राप्त करने के लिए कहता है जो पवित्र आत्मा उन्हें देता है। पौलुस का यह मानता है कि कुरिन्थियों के लोगों ने पवित्र आत्मा का वरदान पाया है (1 कुरिन्थियों 2:12) और पवित्र आत्मा मनुष्य को साधारण व असाधारण दोनो ही प्रकार के वरदान प्रदान कर सकता है। जबकि कुरिन्थ वासी स्वयं अपनी उन्नति करने के लिए अन्यान्य भाषा में बोलने के वरदान को प्राप्त करने की धुन में लगे हुए थे, प्रेरित पौलुस उनसे उस वरदान को हासिल करने के लिए धुन लगाने या प्रयास करने के लिए कहता है जिससे कलीसिया की *उन्नति* हो! पौलुस आत्मिक वरदान पाएं हुए मसीहियों को प्रेरित करता है कि वे ऐसे वरदान हासिल करने का प्रयास करें जिससे कलीसिया की उन्नति हो।

निम्नलिखित खण्ड (1 कुरिन्थियों 14:13-19) दर्शाता है कि कुरिन्थियों को नियमितता में बने रहने वाले आत्मिक वरदानों को (अर्थात भविष्यद्वाणियां जिसमें समझने योग्य भाषा में परमेश्वर के वचन की उदघोषणा की जाती है) उन वरदानों से ज्यादा मान देना चाहिए जो अचानक से फूट पड़ते हैं अर्थात अन्यान्य भाषा का वरदान। पौलुस का नज़रिया यह देखना नहीं है कि कुरिन्थ की कलीसिया में क्या हुआ, लेकिन वह यह देख रहा है कि कुरिन्थ की कलीसिया और और संसार की बाकि कलीसियाओं की आत्मिक आधिकारिक सभाओं में क्या होना चाहिए (1 कुरिन्थियों 14:33)।

## 2. आत्मिक वरदानों को प्राप्त करना।

कौन इस बात का फैसला करता है कि मसीहियों को कौन से वरदान दिया जाना चाहिए?

त्रीएक परमेश्वर (परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा) मसीहियों को अपने श्रेष्ठ और अनुग्रहकारी तरीके से आत्मिक वरदानों (योग्यताओं, क्षमताओं और कौशल) का देनेवाला और विशेष काम करने वालों या अधिकारियों को नियुक्त करने वाला जिनके पास कलीसिया में अधिकार हों (1 कुरिन्थियों 12:11,18,28; इफिसियों 4:7; इब्रानियों 2:4; 1 पतरस 4:10)। वह ही इस बात का निर्णय लेता है कि वह कौन सा काम या वरदान और देता है और किसको देता है। पौलुस उन मसीहियों को प्रोत्साहित करता है जिन्हें पहले से आत्मिक वरदान मिले हुए हैं कि वे आत्मिक वरदानों को इस्तेमाल करने की धुन में रहें ताकि मण्डल की उन्नति हो, क्योंकि उन वरदानो के माध्यम से परमेश्वर का स्पष्ट प्रकाशन या वचन लोगों तक पहुंचता है (1 कुरिन्थियों 14:12,19)।

परमेश्वर ने मसीह की देह में हर एक मसीही के लिए एक विशेष स्थान नियुक्त किया है (1 कुरिन्थियों 12:12-18)। हालांकि वह हर एक मसीही को करने के लिए कोई विशेष काम नहीं देता, लेकिन हर एक मसीही को *सेवा करनी* चाहिए (1 पतरस 4:10-11)! और इसी तरह से वह हर एक मसीही जन को *आत्मिक वरदान* नहीं देता है (क्षमता/योग्यता या अधिकार के साथ कोई कार्य/कार्यक्षेत्र), मगर हर एक मसीही को प्रेम करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 13:1-13)!

## 3. आत्मिक वरदानों को पहिचानना।

किस तरह मसीही लोग पहिचान पाते हैं कि क्या परमेश्वर ने उन्हें कोई वरदान दिया है और वह वरदान क्या है? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि वरदान साधारण है (जैसे कि शिक्षा देना) या असाधारण (जैसे चंगाई देने का वरदान) या कोई कार्य/अधिकार (जैसे, प्रचारक, पासबान या शिक्षक)।

### (1) बाइबल का अध्ययन व प्रार्थना करके।

आत्मिक वरदानों, उनकी विशेषताओं और कार्यों के बारे में बाइबल की शिक्षाओं को समझें।

### (2) मसीह की देह में सेवा करने के द्वारा।

विभिन्न तरह की मसीही सेवाकाईयों में जुट जाएं, जैसे कि बच्चों का शिक्षा देना, युवाओं की अगुवाई करना, असहायों पर दया करना, समस्या में पड़े लोगों को प्रोत्साहित करना, सुसमाचार प्रचार करना, शिष्यता समूहों में प्रतिभागिता करना इत्यादि। यदि परमेश्वर ने आपको आत्मिक वरदान दिया है तो वह वरदान दूसरों की सेवा करने और मसीही की कलीसिया का निर्माण करने के दौरान अपने आप प्रगट होने लग जाएगा। परमेश्वर हमें वरदान डींग मारने के लिए एक आभूषण के समान नहीं देता, वरन वह हमें यह योग्यता दूसरों की सेवा करने, मसीह की कलीसिया का निर्माण करने, सेवा के काम और परमेश्वर की महिमा के लिए (अपनी महिमा के लिए नहीं) दूसरों को तैयार करने के लिए देता है! जो मसीही सेवा नहीं करता, वह कभी नहीं जान पाएगा कि परमेश्वर ने उसे सेवा करने के लिए कोई विशेष वरदान दिया है कि नहीं।

### (3) अपनी सेवा का मूल्यांकन का करके (केवल अपनी क्षमता का मूल्यांकन नहीं)।

एक आत्मिक वरदान एक ऐसी योग्यता (क्षमता) या अधिकार (अधिकार के साथ विभाग) है जो आपको उस वरदान के क्षेत्र में काम करने के लिए प्रेरित करता है। वह उसी क्षेत्र में सेवा करने की इच्छा के रूप में अपने आप को प्रगट करता है। आत्मिक वरदानों को सेवा, दूसरों को बनाने और उनको तैयार करने से अलग नहीं किया जा सकता, इसलिए जिस प्रकार का प्रभाव आपको दूसरों पर पड़ता है वह आपके आत्मिक वरदान का चिन्ह ठहरता है।

अपने आप से निम्न प्रश्नों को पूछें:

- "दूसरे मसीही मेरी सेवा के बारे में क्या कहते हैं?"
- "ज्यादातर लोग मुझसे क्या करने के लिए कहते हैं?"
- "उनके विचारों से मैं क्या काम अच्छी तरह से कर सकता हूँ?"
- "उनके हिसाब से मैंने ऐसा क्या काम किया जिससे उन्हें लाभ पहुंचा?"

फिर अपने आप से इन प्रश्नों को पूछें:

"मैं स्वयं अपनी सेवा के बारे में क्या कहता हूँ?"

"मैं किन कामों को आनन्द के साथ करता हूँ?"

"मैं किन कामों को करने में महारथी हूँ?"

"मैं कौन से ऐसे काम करता हूँ, जो दूसरे लोगों की सेवा, सहायता, उनका निर्माण व उनको तैयार करता है?"

## 4. आत्मिक वरदानों का सौंपा जाना।

एक मसीही को कलीसिया में अपने आपको किस प्रकार से देखना चाहिए? कलीसिया के भीतर अनेकों प्रकार के मसीही विद्यमान होते हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपनी श्रेष्ठ योजना और अनुग्रह से कलीसिया में रखा है (रोमियों 12:3-6;1 कुरिन्थियों 12:4-7,14-27)। आत्मा के बहुत से प्रकाशन (प्रगटीकरण) हैं (1 कुरिन्थियों 12:7)। वे भिन्न होते हैं:

- अलग अलग प्रकार का अनुग्रह प्राप्त होता है (ग्रीक: चैरिश)
- परमेश्वर हर एक मसीही को अलग विश्वास की परिमाण देता है (इफिसियों 4:7)
- आत्मा अलग अलग प्रकार के आत्मिक वरदान (ग्रीक: करिश्मा) देता है (1 कुरिन्थियों 12:4), उदाहरण के लिए शिक्षा देना।
- परमेश्वर के राज्य में अलग अलग प्रकार की सेवा (सेवाकाई) होती है. उदाहरण के लिए, बच्चों को शिक्षा देना
- आत्मा का अलग तरीके से प्रभाव (1 कुरिन्थियों 12:6)। उदाहरण के लिए, कहानियों और चित्रकला के द्वारा शिक्षा देना।

परमेश्वर की योजना ही के द्वारा मसीहियों में यह अन्तर और विविधता पायी जाती है। वही है जो हर एक के जीवन को एक दिशा प्रदान करता है।

### (1) आत्मिक वरदानों को सौंपने के लिए नम्रता की आवश्यकता होती है।

रोमियों 12:3 में लिखा है, "जैसा समझना चाहिए उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को समझे; पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को विश्वास परिमाण के अनुसार बाँट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे।" "खुद के बारे में वास्तविकता से बढ़कर सोच रखना" घमण्ड है। घमण्ड का अर्थ उस विशेष अधिकार (आत्मिक वरदान) की लालच या इस्तेमाल करना है, जो आपका है ही नहीं। कोई भी जन अपनी बढ़ाई करने से नहीं रूकता। लेकिन जो मसीही जन जो कलीसिया में किसी दूसरे जन को दिये गये उस अधिकार का प्राप्त करने के लिए लालायित है जो परमेश्वर द्वारा उसे दिये गये वरदान से अलग है, तो वह व्यक्ति निश्चित तौर पर अपनी बढ़ाई चाहता है। यह बात अन्यान्य भाषा के वरदान को हासिल करने में भी लागू होती है।

"उतना ही सोचना जितना अपने बारे में सोचना चाहिए" नम्रता है। मसीहियों को उस वरदान के अपने पास होने का दिखावा नहीं करना चाहिए जो उनके पास नहीं है। मसीहियों को इस बात से भी इनकार नहीं करना चाहिए कि परमेश्वर ने उन्हें अपने अनुग्रह से यह या वह आत्मिक वरदान दिया है। झूठी बढ़ाई करना और झूठी नम्रता का प्रदर्शन करना दोनों ही गलत हैं। मसीहियों को अपना मूल्यांकन अपने ही पैमाने से नहीं करना चाहिए वरन विश्वास के उस परिमाण से करना चाहिए जो परमेश्वर ने उन्हें दिया है।

### (2) आत्मिक वरदानों को सौंपनें में विश्वास की जरूरत होती है।

रोमियों 12:3 में दर्शाया गया "विश्वास" को साधारण विश्वास के रूप में दर्शाया गया है, जैसे कि परमेश्वर व उसकी प्रतिज्ञाओं पर "भरोसा करने" या "आस लगाये रखना"। लेकिन, "विश्वास का परिमाण" वाक्य यहां पर *विश्वास की गिनती* की बात नहीं कर रहा है वरन यहां पर *विश्वास की किस्म* की चर्चा हो रही है। पौलुस यहां पर बहुत से उन पहलुओं के बारे में सोच रहा है जिनमें एक मसीही जन अपने विश्वास से जुड़े आत्मिक वरदानों की सहायता से दूसरों और कलीसिया के लिए आशीष का कारण हो सकता है।

विश्वास के विभिन्न परिमाण, विश्वास के उन भिन्न तरीकों को प्रगट करता है जिनका इस्तेमाल कलीसिया में पाये जाने वाले विभिन्न आत्मिक वरदानों के साथ किया जाना चाहिए।

परमेश्वर के सर्वोत्तम अनुग्रह से, हर एक मसीही जन अर्थात मसीह की देह के अंगों को "विश्वास का परिमाण" दिया गया है, जिसके अन्तर्गत उसे:

- मसीह की देह में एक विशेष स्थान दिया गया है (1 कुरिन्थियों 12:18)
- सम्भवत: एक साधारण या असाधारण आत्मिक वरदान (अधिकार के साथ कोई जिम्मेदारी) (1 कुरिन्थियों 12:11)
- विश्वास का एक विशेष परिमाण जिसके द्वारा और जिसकी सीमा के अन्तर्गत रहते हुए हमें उसकी सेवा करनी चाहिए (रोमियों 12:3)।

विश्वास की जरूरत केवल कलीसिया के सदस्य बनने पर ही नहीं पड़ती। मसीह की देह के सदस्य होने के नाते हमें अपने आत्मिक वरदानों और विभिन्न प्रकार की सेवाओं को प्रदर्शित करने के लिए विश्वास की जरूरत होती है। सारे आत्मिक वरदानों को इस्तेमाल केवल मसीह में विश्वास और उसके द्वारा दिये गये प्रेम के द्वारा ही किया जा सकता है(1कुरिन्थियों 13)। अत: हर एक आत्मिक वरदान निम्नलिखित बातों से सीमित है:

- योग्यता या अधिकार की किस्म
- किसी स्थान पर नियुक्त की गयी सेवाकाई की किस्म
- और जिस विश्वास के साथ वह सेवाकाई की जा रही है

## ग. आत्मिक वरदानों की विशेषताएं

उपखंड केवल एक चुना गया हिस्सा और एक अल्प सारांश है। "अधिक आत्मिक वरदान" आप मैनुएल 7, परिशिष्ठ 12 में देख सकते हैं।

### 1. प्रेरित।

**(1) मसीह का प्रेरित (मरकुस 3:13-19; प्रेरित 1:21-22; 1कुरिन्थियों 9:1; प्रकाशितवाक्य 21:14)।**

वे अनोखे थे। मसीह के प्रेरितों का कोई वारिस नहीं था। वे मसीह के आंखो देखे और कानों सुने गवाह थे (प्रेरितों 1:22), नये नियम के लेखक थे (2 पतरस 3:1-2,15-16) और संसार भर की ऐतिहासिक विश्वव्यापी मसीही कलीसिया के संस्थापक थे (मत्ती 16:18; इफिसियों 2:20)।

**(2) मण्डलियों के प्रेरित (2 कुरिन्थियों 8:23; फिलिप्पियों 2:25)।**

वे स्थानीय कलीसिया के प्रतिनिधि मण्डल या प्रतिभागी थे जिन्हें किसी विशेष कार्य को पूरा करने के लिए भेजा गया था। वह शब्द आधुनिक मिश्नरियों के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है जो जाकर सुसमाचार प्रचार करते, नयी मण्डलियों की स्थापना करते और इन मण्डलियों की स्थापना करते हैं (प्रेरितों 14:14; रोमियों 16:7; गलातियों 1:19)।

## 2. प्रकाशन, भविष्यद्वक्ता और भविष्यद्वाणी।

- "प्रकाशन" (1 कुरिन्थियों 14:6,26) में नये प्रकाशनों का खुलासा किया गया है खास तौर पर दर्शनों द्वारा (2 कुरिन्थियों 12:1; प्रकाशितवाक्य 1:1,10,12)।
- "एक भविष्यद्वाणी" परमेश्वर द्वारा प्रगट की गयी बातों का बताना या उसकी उदघोषणा करना। इसका अर्थ पवित्र आत्मा की प्रेरणा द्वारा बताना या प्रचार करना है। "यीशु मसीह की गवाही भविष्यद्वाणी की आत्मा है"(प्रकाशितवाक्य 19:10)। इसका अर्थ है कि जो कुछ मसीह की आत्मा ने पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं (1 पतरस 1:10-12) और नये नियम के प्रेरितों द्वारा बोला (यूहन्ना 15:13-15) और जो अब बाइबल में लिखा हुआ है वह "आत्मा" या बाइबल की भविष्यद्वाणियों का निचोड़ है। इसे बाइबल तीन अभिप्रायों में इस्तेमाल किया जाता है।

### (1) पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने पुराने नियम के प्रकाशन की घोषणा की।

ये भविष्यद्वक्ता नये नियम के प्रकाशन के उपकरण थे और उन्होंने स्वयं परमेश्वर के वचनों का प्रचार किया! वे परमेश्वर के मुंह ठहरे और उनके द्वारा बोले गये वचन सारे परमेश्वर की सामर्थ से भरे हुए थे। वे अनोखे थे। यह वरदान या अधिकार केवल पुराने नियम के दौर में ही सक्रिय था (मत्ती 11:13)। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता परमेश्वर द्वारा प्रेरित प्रवक्ता थे और उनके प्रकाशन संसार भरे के लोगों को लाभान्वित करने के लिए दिये गये थे।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं का कोई उत्तराधिकारी नहीं था! आज कल इस योग्यता को धारण करने वाला कोई भविष्यद्वक्ता नहीं है, क्योंकि अपने और अपनी योजना के सम्बन्धित परमेश्वर के प्रकाशन, जिनकी शुरूआत उसने पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के साथ की थी,मसीह में आकर(यूहन्ना 1:18; इब्रानियों 1:1-2)और मसीह के प्रेरितों की गवाही में पूरी हो गयी(यूहन्ना 16:13-15)। उनके प्रकाशनों को बाइबल "व्यवस्था" में अंकित किया गया है या तब से लेकर अब तक बाइबल की 66 पुस्तकों में बन्द कर दिया है। कोई भी जन अब बाइबल को "वचन" या "पुस्तक" को जोड़ नहीं सकता (प्रकाशितवाक्य 22:18-19)।

### (2) नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने विशेष परिस्थितियों में परमेश्वर की इच्छा को वयक्त किया।

वे अदभुत और अनोखे थे। यह आत्मिक वरदान और अधिकार (नियुक्त काम, प्रेरितों 15:32-33) केवल नये नियम की कलीसिया के प्रारम्भिक काल में ही सक्रिय थे। जब तक कि नये नियम की बातों को लिखित रूप नहीं प्रदान कर दिया गया तब तक वे समय समय पर या किसी विशेष परिस्थिति में बताते रहते थे कि परमेश्वर प्रारम्भिक कलीसिया से क्या कहना चाहता है। उनकी भविष्यद्वाणियां सीमित थीं।

हालांकि मसीह के प्रेरित सभी भविष्यद्वाणी कर सकते थे, लेकिन नये नियम के भविष्यद्वक्ता मसीह के प्रेरित नहीं थे। जबकि मसीह के प्रेरितों ने परमेश्वर से ऐसे प्रकाशनों को पाया जो बुनियादी तौर पर पूरे ससांर में नये नियम के काल की सारी कलीसियाओं के लिए अति महत्वपूर्ण थे (1 कुरिन्थियों 15:3; गलातियों 1:11-12,16), लेकिन नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं को जो प्रकाशन प्राप्त हुआ जिसका कोई सामान्य या स्थायी अभिप्राय नहीं था (प्रेरितों 11:27-28; 13:1-4; 21:10-11)। एक तरफ मसीह के प्रेरितों ने प्रकाशनों की उदघोषणा करते हुए कहा कि मसीह की पहले आगमन से लेकर दूसरे आगमन तक में जन्में संसार के सारे मसीहियों को मसीह को जानना, विश्वास करना और उसके अनुसार काम करना है, वहीं दूसरी तरफ नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने केवल सीमित प्रकाशन का प्रचार किया कि प्रारम्भिक मसीही

कलीसिया में केवल सीमित मसीही समूह को ही विशेष परिस्थितियों में जानना, विश्वास करना और कार्य करना है।

नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने लोगों से उनकी उन्नति (सशक्तिकरण), प्रोत्साहन और उनके आराम के लिए (1 कुरिन्थियों 14:3; प्रेरितों 15:30-32) या उन्हें चौकस करने के लिए बातचीत की (1 कुरिन्थियों 14:8; प्रेरितों 11:27-28; 21:10-11)। "भविष्यद्वाणी" प्राथमिक रूप में "उन्नति, प्रोत्साहन और विश्राम" को दर्शाता है (1 कुरिन्थियों 14:3) और "नये प्रकाशन" को नहीं (प्रेरितों 13:1-4)। बाइबल के अनुसार भविष्यद्वाणी की विषयवस्तु "यीशु मसीह की गवाही" (वही भविष्यद्वाणी का लेखक और विषयवस्तु है) (प्रकाशितवाक्य 19:10)। यह उन सारी बातों को दर्शाता है जिन्हें यीशु मसीह ने पुराने नियम (1 पतरस 1:10-12) और नये नियम में सिखाया था (यूहन्ना 16:13-15)।

मसीह के प्रेरित नये नियम को लिखने और उसे प्रगट करने के लिए मसीह के चुने हुए उपकरण थे(यूहन्ना 14:26; 16:13-15; 20:31)। इसके विपरीत, नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं की केवल कुछ ही भविष्यद्वाणियों को नये नियम में लिखा गया है(प्रेरितों 11:28; 21:11)। इससे यह बात साबित होती है कि नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं को उस तरीके से प्रकाशन प्राप्त नहीं हो रहा था जैसे कि मसीह के प्रेरितों को। जबकि यीशु मसीह के प्रथम आगमन से लेकर उसके दूसरे आगमन के बीच में प्रेरितों की शिक्षा और उनके प्रचार निर्विवाद, अचूक और अधिकार से पूर्ण हुआ करते थे(प्रेरितों 2:42;2 तीमुथीयुस 1:13; प्रेरितों 16:4 ; फिलिप्पियों 4:9), जबकि नये नियम के भविष्यद्वाणियों को दूसरे मसीहियों द्वारा तौला ओर परखा जाता था( 1कुरिन्थियों 14:29-33)[1]। मसीह के प्रेरितों में से बहुतों को आत्मिक वरदान और अधिकार प्राप्त थे। यीशु मसीह के चेलों का कोई उत्तराधिकारी नहीं था!

**(3) पवित्र आत्मा की प्रेरणा में होकर भविष्यद्वाणी का वरदान उन बातों की उदघोषणा करता है जिसे मसीह के प्रेरितों ने अपनी शिक्षाओं और प्रचारों में पहले ही प्रगट कर दिया है।**

"भविष्यद्वाणी" शब्द का सामान्य मतलब यही है। "भविष्यद्वाणी करना" (रोमियों 12:7) वह विशेष योग्यता या काम है जिसका इस्तेमाल बाइबल आधारित सत्यों को प्रचार करने के द्वारा विशेष मसीहियों की उन्नति करने, प्रोत्साहित करने तथा उन्हें विश्राम देने के लिए (1 कुरिन्थियों 14:3; प्रेरितों 15:32) या विश्वासियों को विभिन्न प्रकार की सेवा (इफिसियों 4:12) हेतू तैयार करने के द्वारा मसीह की देह के रूप में कलीसिया की उन्नति करने के लिए किया जाता है। आत्मिक वरदान पाये हुए मसीही बाइबल में पहले से प्रगट परमेश्वर के वचनों को खुले आम प्रेरणा पाकर, दृढ़ता और लोगों को कायल करते हुए प्रचार करते है। वे साफ शब्दों में (1 कुरिन्थियों 14:8) और सामर्थ्य (प्रेरितों 6:10; 1 थिस्लुनिकियों 1:5) के साथ बोलते हैं।

"भविष्यद्वाणी करने में" लोगों के गुप्त विचार, उद्देश्यों, स्वभाव, बातें और कामों का खुलासा हो सकता है। पवित्र आत्मा मसीहियों के प्रचार, शिक्षा और उपदेश या सलाह का इस्तेमाल भविष्यद्वाणी के वरदान के साथ सुनने वाले के छुपे मुद्दों को प्रगट करने के आशय से करता है, ताकि उसे पश्चाताप करने या अपना जीवन परिवर्तन करने का अवसर मिल सके। इस प्रकार की भविष्यद्वाणी करने का प्रभाव यह होता है कि सुनने वाले के पाप या गलतियां पूरी तरह से प्रगट हो जाती है (1 कुरिन्थियों 14:24-25)। पापों को मान लेने या

---

"ex cathedra" 1 समेत सारे निर्णय व आदेशों को बाइबल में दिये गये प्रकाशन की ज्योति में परखा जाना चाहिए जिसमें कलीसियाई इतिहास में पोप द्वारा उठाये गये सारे कदमों और लिये गये निर्णय शामिल हैं!

स्वीकार करने का काम सार्वजनिक तौर पर मण्डली के सामने भी हो सकता है (प्रेरितों 5:3-4) या फिर वह अपने मन में ही अपने पापों को मान सकता है (प्रेरितों 3:37; यूहन्ना 16:8)।

## 3. शिक्षक और शिक्षा।

### (1) शिक्षक होने का काम (न्यायाधिकार, अनुज्ञापत्र, अधिकार) या शिक्षा देने की योग्यता (क्षमता, कौशल)।

"शिक्षक" कलीसिया में एक *असाधारण क्षमता* (योग्यता)(रोमियों 12:7) या एक *साधारण अनुज्ञापत्र* (काम, कार्यालय, नियुक्त सेवा) है (1 कुरिन्थियों 12:28; इफिसियों 4:11; 2 तीमुथीयुस 1:11)। शिक्षक बाइबल की सच्चाई को विशेष तौर पर मसीहियो को समझाते हैं। वे नये नियम की कलीसिया में साधारण अधिकारों वाले जन या अधिकारी के रूप में गिने जाते हैं। जबकि भविष्यद्वक्ता अपने संदेश परमेश्वर की आत्मा द्वारा दिये गये प्रकाशन से (बाइबल से भी) प्राप्त करता है, शिक्षक पुराने नियम के अध्ययन, यीशु मसीह की शिक्षाओं, प्रेरितों की शिक्षाओं से, अर्थात बाइबल की 66 पुस्तकों से प्राप्त करता है। शिक्षक बनने का अधिकार हर एक जन की महत्वाकांक्षा पर निर्भर करता है, और ऐसा कहीं नहीं लिखा गया है कि एक शिक्षक बनने के लिए किस आत्मिक वरदान की जरूरत पड़ती है (याकूब 3:1)। शिक्षक बनने का अधिकार उसके आत्मिक वरदान की बजाय उसकी *बुलाहट* पर निर्भर करता है।

कुछ मसीही लोगों को शिक्षक या चरवाहे-शिक्षक का वरदान प्राप्त होती है (इफिसियों 4:11), लेकिन ध्यान देने वाली बात यह है कि कलीसिया में शिक्षक या उपदेशक होना एक बहुत बड़ी बात होती है (याकूब 3:1)। लेकिन दूसरे मसीहियों को शिक्षा देने का वरदान (योग्यता) प्राप्त होती है (रोमियों 12:7)। लेकिन *सारे मसीहियों* को (शिक्षा देने के आत्मिक वरदान के साथ या उसके बिना) एक दूसरे को सिखाने और समझाने के लिए बुलाया गया है (मत्ती 28:20; कुलुस्सियों 3:16)।

### (2) कलीसिया में एक शिक्षक का कार्य।

***पढ़ें*** एज्रा 7:10।

- शिक्षक का प्रथम काम सत्य की परख करने, तथ्यों की खोज करने तथा बाइबल की सच्चाईयों को वर्गीकृत करने के लिए बाइबल का विस्तारपूर्वक वर्णन *अध्ययन करना* है (प्रेरितों 17:11)।
- शिक्षक का दूसरा काम होता है कि वह जिन बातों का प्रचार करता है उसका अपने जीवन में *अभ्यास करे।* वे सत्य का पालन करने में दूसरों के लिए आदर्श बनते हैं (मत्ती 23:2-4; रोमियों 2:21; 1 तीमुथीयुस 4:12; तीतुस 2:7-8)।
- शिक्षकों का तीसरा कार्य सत्य को *समझाने* और व्यवहारिक बनाने के लिए बाइबल के शिक्षाओं को अधिकार और इस तरह से सिखाना है जिससे उसका मूल अर्थ नष्ट न हो जाए (मरकुस 1:22; प्रेरितों 8:30-31; 20:20,27; 2 तीमुथीयुस 2:15)। शिक्षा नये मसीहियों को शिष्य बनाने के लिए दी जाती है ताकि वे अपने जीवन में मसीह की आज्ञाओं को मानना सीख सकें। इसके अलावा शिक्षा उन मसीहियों को दी जाती है जो सीखने की आत्मा रखते हैं, जो विश्वासयोग्य और दूसरों को शिक्षा देने में योग्य हों (मत्ती 28:20; लूका 6:40; 2 तीमुथीयुस 2:2)।

### ( 3 ) कलीसिया में शिक्षक का स्थान।

भविष्यद्वक्ताओं (प्रचारकों) और शिक्षकों की सेवाकाईयां मसीह के प्रेरित की अधीनता में रहने वाली दो महत्वपूर्ण सेवाकाईयां हैं। क्योंकि नये नियम की कलीसिया के प्रारम्भिक काल में केवल मसीह के प्रेरित और नये नियम के भविष्यद्वक्ता की ही मुख्य भूमिका होती है:

- शिक्षक की सेवा (1 तीमुथीयुस 5:17)
- शिक्षा का साधारण काम या लक्ष्य (कुलुस्सियों 3:16)
- शिक्षक का आत्मिक वरदान (इफिसियों 4:11)

इसलिए विश्व व्यापक कलीसिया में इनको बहुत उच्च कोटि की प्राथमिकता दी जानी चाहिए। बाइबल में प्राप्त शिक्षाओं से ज्यादा बेहतर मसीह का निर्माण और कोई नहीं करता!

## 4. प्रचारक।

कलीसिया में "प्रचारक" एक *असाधारण क्षमता* (योग्यता) (प्रेरितों 11:24) या *साधारण अनुज्ञापत्र* (कार्य, अधिकार, नियुक्त सेवा) होता है (इफिसियों 4:11; 2 तीमुथीयुस 4:5)। प्रचारकों ने यीशु मसीह में उद्धार का शुभ सन्देश अन्यजातियों को इतने प्रभावशाली ढंग से सुनाते हैं कि लोगों का उद्धार होता है और कलीसिया में मसीहियों की संख्या बढ़ती चली जाती है। कुछ मसीहियों को प्रचारक के रूप में बुलाया गया है (2 तीमुथीयुस 4:5) जबकि कुछ लोगों ने सुसमाचार प्रचार करने का वरदान पाया है, लेकिन सभी मसीहियों को सुसमाचार प्रचार करने में भागीदार होने के लिए बुलाया गया है (बोने और काटने के लिए)(मत्ती 10:32-33; यूहन्ना 4:37)।

## 5. चरवाहा।

"चरवाहा" कलीसिया में एक असाधारण वरदान या योग्यता (इफिसियों 4:11) या साधारण अनुज्ञापत्र (कार्य, अधिकार, नियुक्त सेवा) है (प्रेरितों 20:28; 1 पतरस 5:1-4)। चरवाहे चराते, सुरक्षा करते, देखभाल करते और मसीहियों की आत्मिक बढ़ोतरी और भलाई करने में अगुवाई करते हैं। वे खोये हुओं को खोजते और भटके हुओं को फिर वापस ले आते हैं। वे छोटों, कमज़ोर और जरूरत मन्दों को खास प्रेम और देखभाल करते हैं। जबकि कुछ मसीहियों को चरवाहें के रूप में बुलाया और नियुक्त किया गया है, तो दूसरो ने चरवाही करने का आत्मिक वरदान पाया है लेकिन *सभी मसीहियों* को एक दूसरे की देखभाल करने की जिम्मेदारी सौंपी गयी है (1 कुरिन्थियों 12:24-26)।

# घ. कलीसिया का निर्माण करने के लिए आत्मिक वरदानों का इस्तेमाल करना

## 1. आत्मिक वरदान व कलीसिया की सेवाकाईयां।

एक मसीही को सारे मसीहियों को लाभ पहुँचाने के लिए किस प्रकार से अपने आत्मिक वरदान का इस्तेमाल करना चाहिए?

### ( 1 ) मसीहियों को एक दूसरे की सेवा की जरूरत हैं।

मसीह की देह के हर एक अंग ने दूसरे अंग की सेवा करनी चाहिए। और हर एक सदस्य को दूसरे सदस्यों की सेवा की आवश्यकता होती है। अत: पवित्र आत्मा द्वारा प्रदान किये गये साधारण या असाधारण वरदान द्वारा एक दूसरे की सेवा करना एक दूसरे के प्रति प्रेम प्रगट करना भी है। जिस प्रकार से हाथ बिना पैर के

कुछ नहीं कर सकता और पैर बिना आंखों के कुछ नहीं कर सकता, इसी तरह से कोई भी एक सदस्य दूसरे सदस्य के बिना कुछ नहीं कर सकता। एक विश्वासी का सामान्य गुण या आत्मिक वरदान दूसरे विश्वासी के गुण और वरदान का पूरक है। इस तरह से मसीह की कलीसिया उत्तम तरीके से बनायी जा रही है।

**( 2 ) एक आदर्श के रूप में शिक्षक का आत्मिक वरदानों ।**

आईये शिक्षक के आत्मिक वरदान को एक उदाहरण के रूप में ले लेते हैं। चाहे किसी के पास कोई आत्मिक वरदान हो या न हो लेकिन सारे मसीहियों को सामान्यत: एक दूसरे को शिक्षा देने की सेवाकाई में शामिल होना चाहिए। दूसरों को मसीही की आज्ञा मानना सिखाकार सारे मसीहियों को चेला बनाने की सेवा में शामिल होना चाहिए (मत्ती 28:19-20)! सारे मसीहियों को परमेश्वर के वचनों को अपने हृदयों में गहराई से बसने देना और सिद्ध ज्ञान से एक दूसरे को सिखाना चाहिए (कुलुस्सियों 3:16)! जबकि सब मसीहियों सिखाना चाहिए, लेकिन कुछ ही मसीहियों को *शिक्षक होने का आत्मिक वरदान* मिला है (1 कुरिन्थियों 12:29)।

जिन लोगों को शिक्षक के रूप में आत्मिक वरदान प्राप्त है, उनकी जिम्मेदारी है कि वे निम्नलिखित तीन कामों को अवश्य करें:

- शिक्षा देने के द्वारा दूसरे मसीही की सेवा जरूर करें।
- दूसरे मसीहियों के लिए शिक्षा देने के क्षेत्र में एक आदर्श बनें।
- यदि सम्भव हो तो वे किसी मसीही को सिखाएं कि कैसे शिक्षा प्रदान की जाती है।

इसी प्रकार से, मसीहियों को प्राप्त वरदानो के द्वारा दूसरों की सेवा करनी चाहिए, दूसरों के लिए सेवा करने के क्षेत्र में एक आदर्श बनना चाहिए और यदि सम्भव हो सके तो दूसरे को अपने वरदान के क्षेत्र में सेवा करने के लिए तैयार करना चाहिए।

**( 3 ) उदाहरण के तौर पर दया करने का वरदान।**

हर एक मसीही को दया करने वाला बनना चाहिए। उन्हें भले सामरी के समान बनकर जरूरत मन्द लोगों की सेवा करने के लिए बुलाया गया है (लूका 10:37)। सभी मसीहियों का दया करनी चाहिए, लेकिन कुछ मसीहियों को *दया करने का विशेष वरदान* प्राप्त है (रोमियों 12:8)। इन मसीहियों ने दया करते हुए दूसरों की सेवा करनी चाहिए, दूसरों के लिए दया करने के मामले में आदर्श बनना चाहिए, और यदि सम्भव हो तो दूसरों को भी दया करना सिखाना चाहिए।

## 2. आत्मा के वरदान और आत्मा के फल।

पवित्र आत्मा द्वारा दिये गये आत्मिक वरदानों को प्राप्त करना *आत्मिक होने या परिपक्वता* का प्रमाण नहीं है। कुरिन्थियों की कलीसिया में सभी आत्मिक वरदान विद्यमान थे (1 कुरिन्थियों 1:7)। फिर भी वे आत्मिक व परिपक्व नहीं थे, बल्कि वे सांसारिक और मसीह में दूध पीते बच्चे थे (1 कुरिन्थियों 3:1-4)। बिना प्रेम के आत्मिक वरदानों का इस्तेमाल करना असम्भव और परमेश्वर की दृष्टि में पूरी तरह व्यर्थ है (1 कुरिन्थियों 13:1-3)।

आत्मा के अनुसार जीवन व्यतीत करने,आत्मा से परिपूर्ण होने, और आत्मा की अगुवाई में चलने का वास्तविक प्रमाण आत्मा के वरदानों को इस्तेमाल करना नहीं, परन्तु आपके जीवन में आत्मा के फलों का

प्रगट होना है (गलातियों 5:22-23)। हो सकता है कि आपके जीवन या आपकी कलीसिया में आत्मिक वरदानों की कमी हो, लेकिन प्रेम जैसे आत्मा के फलों की आपके जीवन में कोई कमी नहीं होनी चाहिए।

| 5 | **प्रार्थना** (8 मिनट) *[प्रतिक्रिया]*<br>**परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना** |
|---|---|

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।***
या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

| 6 | **तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]*<br>**अगले अध्याय के लिए** |
|---|---|

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

**1.** समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों

**2.** "आत्मिक वरदानों के अनुसार सेवा करना" पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को - प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।

**3.** परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **इब्रानियों 11-13** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

**4.** याद करें। यूहन्ना में से रोज 5 याद की हुई आयतों को **दोहराएं।**

**5.** बाइबल अध्ययन। **यूहन्ना 16** के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।

**6.** प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

**7.** मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।